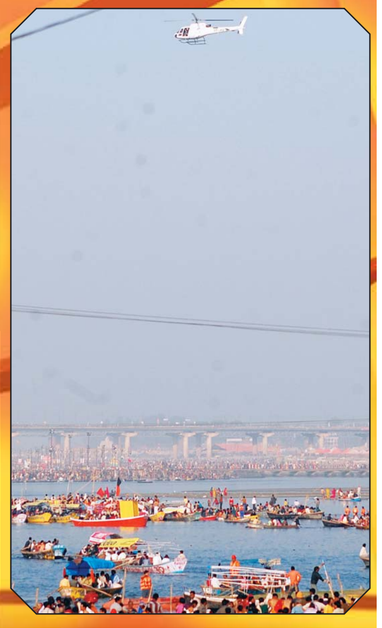

वीतरागियों का शौर्य स्नान

रवि उपाध्याय, कुंभ नगर

अखाड़ों ने शाही पथ पर किया वैभव का खुलकर प्रदर्शन

मौनी अमावस्या के महास्नान पर वीतरागियों ने अपनी शक्ति एवं वैभव का खुलकर प्रदर्शन किया। हजारों नागाओं ने आक्रामक शैली में हुंकार लगाते हुए शाही घाट पर दौड़ लगाई तो महामंडलेश्वरों ने पूरा ऐश्वर्य उड़ेल कर रख दिया। संन्यासियों ने तलवार चमकाई तो किसी ने भाला दिखाया। हर हर महादेव तो सीता राम का उद्घोष भी हो रहा था। अखाड़ों ने पूरा खजाना खोल दिया। सोने चांदी की छड़ी और संतों का राजाओं की तरह ठाट-बाट देखकर लाखों श्रद्धालुओं की आंखें चौंधियां गई। शाही स्नान के इस दृश्य को लोग अपलक देख रहे थे। जूना अखाड़े के संगम तट पर पहुंचने पर वहां का नजारा सबसे अद्भुत था। हालांकि वैरागी एवं उदासीन अखाड़े के शाही स्नान में अलौकिक छटा ज्यादा दिखी।

कुंभ पर्व का महास्नान सुबह 6.15 बजे महानिर्वाणी अखाड़े के इष्टदेव एवं भाला का पूजन के साथ शुरू हुआ। सैकड़ों नागाओं एवं संन्यासियों के संगम में डुबकी लगाने के बाद अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर विश्वदेवानंद ने स्नान किया। इस अखाड़े में 50 से अधिक महामंडलेश्वरों और उनके 50 हजार भक्तों ने डुबकी लगाई। इस अखाड़े के साथ अटल के साधु संत और पदाधिकारी थे। निरंजनी और आनंद अखाड़े एक साथ करीब सवा सात बजे शाही घाट पर पहुंचे।

इस अखाड़े के भगवान निरंजन का स्नान होने के बाद हजारों नागाओं ने लंबी छलांग लगाकर गंगा में डुबकी लगाई। उसके बाद सबने अपने साथ भस्म को शरीर में लगाया। आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी पुण्यानंद गिरि के स्नान के बाद अखाड़े के सभी साधु संत, पदाधिकारियों ने डुबकी लगाई। मेले के सबसे बड़े आकर्षण जूना अखाड़े के 8 बजे शाही घाट पर आने के पहले पुलिस ने पूरा घाट खाली कर दिया था। अखाड़े के सचिव महंत विद्यानंद सरस्वती एवं सचिव महंत हरि गिरि के नेतृत्व में संन्यासियों ने इष्टदेव दत्तात्रेय का स्नान कराया। इसके बाद नागाओं का अनगिनत समूह शाही घाट पर उमड़ पड़ा। इस दृश्य को हर व्यक्ति एकटक देख रहा था। पुलिस की सांस अटकी थी कि कोई अनहोनी न हो जाए। करीब 15 मिनट तक नागाओं ने स्नान किया और शरीर में भस्म लपेट कर जब तक वापस अखाड़े की ओर जाने को नहीं मुड़े लोग हिले तक नहीं। इसके बाद आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरि को स्नान कराने के बाद अन्य महामंडलेश्वर साधु संत भक्त और अग्नि एवं आवाहन अखाड़े के आचार्य एवं साधु संतों ने डुबकी लगाई।

पूर्वाह्न 10.40 बजे से शुरू हुआ वैष्णव अनी के निर्मोही, दिगंबर एवं निर्वाणी अखाड़े का शाही स्नान भी अलौकिक था। सतुआ बाबा के साथ विदेशियों की भीड़ भी अलग दिख रही थी। दोपहर सवा एक बजे से उदासीन नया पंचायती, बड़ा पंचायती एवं निर्मल अखाड़े ने शाही स्नान किया। इन तीनों अखाड़े का वैभव सबसे अधिक था। उदासीन नया पंचायती के साथ योगगुरु रामदेव का स्नान देखने को भारी भीड़ जमा रही। शाम हो पांच बजे शाही स्नान समाप्त हुआ।

छलक उठा कुटिया का वैभव

शाही पथ पर संतों की कुटिया का वैभव छलक रहा था, जिसने भी इस दृश्य को देखा तो वह भी इस अलौकिक दुनिया की ओर आकर्षित हुए बिना नहीं रह पाया। नेताओं और राजाओं का ऐश्वर्य फेल कर देने वाले बाबाओं के इस रहन सहन पर हर व्यक्ति अपनी तरह से मीमांसा करे नहीं रह पाया। इन संतों के साथ उनके भक्तों का अनुशासन भी देखने लायक था।

महिला संन्यासी भी आकर्षण का केंद्र

शाही स्नान में महिला संन्यासी सबसे ज्यादा आकर्षण का केंद्र रही। जूना अखाड़े के महिला संन्यासी अखाड़े में काफी संख्या में विदेशी संन्यासी भी सिर्फ एक वस्त्र लपेटे स्नान चल रही थी।

रामदेव एवं तोगड़िया ने भी किया शाही स्नान

विहिप अध्यक्ष प्रवीण भाई तोगड़िया की शाही स्नान में शामिल होने की इच्छा आज पूरी हो गई। एक रथ पर सवार होकर वे जूना अग्नि एवं आवाहन के साथ शाही घाट पर पहुंचे थे। दोपहर बाद योगगुरु रामदेव भी उदासीन अखाड़े के साथ पहुंचे थे।

जनसमुद्र
मौनी अमावस्या पर श्रद्धालुओं का जनसैलाब इस तरह उमड़ा कि संगम की रेती पर हर तरफ सिर ही सिर दिखाई दे रहे थे। देश ही नहीं विदेश तक से आए श्रद्धालु मां गंगा की महिमा का अनुमान ही नहीं लगा पा रहे थे कि आखिर बिना किसी चिट्ठी व बुलावे के करोड़ों की यह भीड़ कहां से आ गई। धरती से लेकर आसमान तक से निगहबानी की गई। नागा संतों सहित शाही अखाड़ों ने भी स्नान किया।

छाया- चंद्रप्रकाश मिश्र, राकेश कश्यप

साकार, निराकार सब एकाकार

ओमप्रकाश तिवारी

कुंभनगर : मन अभिभूत हो जाता है, आंखें बरसने सी लगती हैं, जिह्वा जय जयकार कर उठती है उस जन सैलाब को देखकर जो एक अद्भुत योग के साथ पधारे महाकुंभ के अवसर पर संगम में डुबकी मारने प्रयाग नगरी आ पहुंचा है। धन्य हैं तीर्थराज प्रयाग।
न कोई न्यौता न बुलावा। न ट्रेन-बस में बैठने का ठिकाना, न कुंभनगरी में पांव टिकाने का ठौर। इसके बावजूद सिर पर सामान का बोरा और कांख में पुवाल का बिछौना दबाए एक के पीछे एक चले आ रहे हैं। कोई बस्ती-गोंडा-बनारस से, तो कोई मुंबई-चेन्नई-आंध्रा से। शनिवार की सुबह से संगम की ओर से जानेवाली हर सड़क पर लगा रेला रविवार की शाम को वापस लौटने लगा है । वाकई अद्भुत है कुंभ का मेला । भारत की आत्मा देखने आए विदेशी पत्रकारों एवं श्रद्धालुओं की आंखें भी फटी जा रही हैं। मौनी अमावस्या रविवार को हुए संतो के शाही स्नान से करीब 24 घंटे पहले ही शुरू हो गई थी । इसलिए दोहरे पुण्य का लाभ लेने के लिए लोग शनिवार सुबह से ही प्रयाग में आने लगे थे। सारे श्रद्धालु आते ही पहली डुबकी मार लेना चाहते थे। इसी डुबकी के लिए तो महीनों से योजना बना रहे थे। कोई बच्चे को कंधे पर लाद कर लाया , तो कोई सर्दी का ख्याल करके उन्हें ननिहाल-ददिहाल में छोड़कर । बैल-बछिया भी पड़ोसियों के भरोसे । घर में अलीगढ़ी ताला।
प्रशासन के लिए भी परीक्षा की घड़ी होती है इतना बड़ा मेला, और मेले में आनेवाला लोगों का रेला। सुरक्षा व्यवस्था, साफ-सफाई, पेयजल, यातायात, खो गए व्यक्तियों को ढूंढने से लेकर किसी अनहोनी को रोकने तक की जिम्मेदारी । मेला अधिकारी, पुलिस के आला अफसर से लेकर दर्जनों की संख्या में जिम्मेदारी संभाल रहे सेक्टर मैजिस्ट्रेट्स को सर्दी के मौसम में भी पसीने छूट रहे थे। दुर्वासावतार अखाड़ाधीशों की नाराजगी का डर अलग से। लेकिन सब निपट गया। इंतजाम में लगे एक उच्च अधिकारी रविवार की शाम राहत की सांस लेते हुए कहते हैं, गंगा मैया ने सब सकुशल निपटा दिया । लोग जैसे बिन बुलाए आए , वैसे ही पूरे संयम और अनुशासन के साथ स्नान करके जा रहे हैं । क्योंकि गंगा-जमुना की आस्था में डूबे व्यक्ति को एक डुबकी के अलावा और किसी चीज से कोई मतलब नहीं होता।

तनाव के 36 घंटे

शनिवार

सुबह सात बजे : जंक्शन के साथ ही रामबाग, दारागंज और प्रयाग स्टेशन पर भी श्रद्धालुओं की भीड़ जमा हो रही थी। अधिकारियों के चेहरे पर रौनक बढ़ी कि उनके अनुमान सही हैं।
अपराह्न चार बजेः डीएम मेला मणि प्रसाद मिश्र ने शाम चार बजे मीडिया के समक्ष एक करोड़ श्रद्धालुओं के आने की घोषणा की।
शाम पांच बजेः डीएम मेला मणिप्रसाद मिश्र और एसएसपी मेला आरकेएस राठौर को सूचना मिलने लगी कि भीड़ दो करोड़ पार कर गई है। चेहरों पर तनाव बढ़ने लगा।
शाम साढ़े पांच बजे : दोनों अधिकारी प्रेस कांफ्रेस के बाद अलग हुए, मगर कुछ ही देर में भूल-भुलैया के सामने फिर दोनों अधिकारियों की गाड़ियां खड़ी हो गईं। पंद्रह मिनट विचार-विमर्श। दोनों अफसर एक ही कार में बैठकर मेला क्षेत्र की तरफ बढ़ गए।
शाम सात बजेः आइजी आलोक शर्मा ने वायरलेस सेट से पुलिस फोर्स को सूचना प्रसारित की-'भीड़ जिधर से आए, उसे उसी तरफ के घाट पर स्नान करवा कर चलता करिए, तभी स्थिति कंट्रोल में आ पाएगी।'
रात 9 बजेः सभी घाट फुल। कंट्रोल रूम से सूचनाएं जारी हुईं कि संगम नोज से भीड़ का दबाव कम किया जाए। मगर भीड़ का रेला तब तक इतना भर चुका था कि हटा पाना मेला प्रशासन के वश के बाहर।
रात 11 बजेः शाही स्नान के लिए बनाया गया घाट भी आम घाट जैसा ही हो गया। भीड़ भोर के शुभ मुहुर्त का इंतजार कर रही थी। बाहर से आ रही भीड़ बढ़ती जा रही थी।

रविवार

रात एक बजेः योजना के अनुसार भीड़ को इधर-उधर मोड़ना शुरू किया गया। फिर भी शहर का रेला मेला क्षेत्र की ओर बना रहा।
तड़के तीन बजेः अधिकारियों के चेहरे पर बेचैनी नजर आने लगी। शाही स्नान के लिए शाही पथ खाली कराना शुरू कर दिया गया। एक अधिकारी ने दावा किया कि एक करोड़ श्रद्धालु स्नान कर चुके हैं।
भोर पांच बजे : झूंसी की भीड़ को अरैल की तरफ मोड़ दिया गयाा। देखते ही देखते अरैल पर भारी भीड़ जमा हो गई, उधर पहले से ही रींवा और मीरजापुर की तरफ से आने वाले श्रद्धालुओं का रेला फंसा हुआ था।
सुबह आठ बजे : पुलिस की सारी प्लानिंग फेल हो चुकी थी। शाही स्नान पर भीड़ का रेला बढ़ता देख मंडलायुक्त देवेश चतुर्वेदी मैदान में उतर पड़े। वह हतप्रभ थे, उन्होंने स्वयं कमान संभाली, मगर भीड़ अब अपने पर थी।
सुबह दस बजेः पहले ही अरैल घाट भर चुका था, अब भीड़ को कहीं भी ले जाने का प्लान खत्म कर दिया गया। भीड़ को सर्किल में घुमाया जाने लगा।
सुबह 11 बजेः भूल भुलैया खोलने का प्लान किया गया लेकिन फिर दबाव कम होने की सूचना पर मुल्तवी कर दिया गया।
दोपहर एक बजेः शहर के स्नानार्थियों की भीड़ शुरू हुई लेकिन अब संगम से चिंता के बादल हट चुके थे। अफसरों के थके-हारे चेहरों पर मुस्कान लौटी
शाम सात बजेः अधिकांश बड़े अफसर अपने शिविर में थे। जुबां पर सिर्फ एक वाक्य-'गंगा मैया ने सबकी लाज रख ली।'

रोकी गई ट्रेनें

जंक्शन पर इतनी ज्यादा भीड़ हो गई थी कि कई ट्रेनों को आउटर के स्टेशनों पर ही घंटों रोक दिया गया। इससे कुंभ क्षेत्र में आने वाले श्रद्धालुओं को काफी दिक्कतें हुईं। नैनी, थरवई और फुलपुर में ट्रेनों को तीन-तीन घंटे रोक दिया गया। थरवई में मेला स्पेशल ट्रेन को रोक दिया तो उसके यात्री वहां से टेंपों से इलाहाबाद की ओर चल पड़े, उन्हें स्नान की जल्दी थी।
मैदान में उतर पड़ीं आइजी की पत्नी
सुबह आठ बजकर 25 मिनट पर आइजी आलोक शर्मा शाही स्नान घाट से भीड़ से जूझ रहे थे, तो उनकी पत्नी से न रहा गया और वह भी भीड़ को नियंत्रित करने के लिए कूद पड़ीं। पुरुषों को धक्का देकर बल्ली पार करा देतीं तो महिलाओं का हाथ पकड़ कर उन्हें पीछे करतीं।

चक्कर लगाते रहे हेलीकाप्टर

तमाम आशंकाओं के मद्देनजर सेना के हेलीकाप्टर ऊपर से मेला क्षेत्र का निरीक्षण करते रहे। हर तरह से सुरक्षा व्यवस्था पर नजर रखी जा रही थी। पुलिस और सेना के अधिकारियों के बीच लगातार संवाद बढ़ता गया। विशेषकर उस समय जब भगदड़ की घटनाएं होने लगीं।